अव्यक्त-सन्देश

(अव्यक्त वतन से प्राप्त अव्यक्त-सन्देशों का संग्रह)

ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी एवं मोहिनी बहन द्वारा अव्यक्त वतन से बापदादा ने जो दिव्य-सन्देश समय प्रति समय दिये हैं, यहाँ उसी का संकलन है ।

मई १९९७ से मार्च २००० तक के अव्यक्त-सन्देश

10-05-97

हर परिस्थिति में अचल-अडोल रहने के लिए मास्टर त्रिकालदर्शी बनो

आज अमृतवेले बापदादा के पास जाना हुआ, जाते ही क्या देखा? बापदादा दूर से ही बहुत पावरफुल लाइट माइट हाउस स्वरूप में खड़े थे और बहुत पावरफुल दृष्टि और स्नेह रूप से मिलन मना रहे थे। मैं भी उस मिलन में लवलीन हो गई। कुछ समय के बाद बाबा बोले–आओ मेरे विश्व-कल्याणकारी बच्चे – आओ, बोलो साकार संसार का क्या हाल है? मैं मुस्कराई और नयनों से ही उत्तर दे रही थी कि बाबा तो सब जानते ही हैं। बाबा बोले – बच्ची, आजकल क्या-क्या नज़ारे देख रहे हैं? ये सब नज़ारे आपको सूचना दे रहे हैं कि अब अति के बाद अन्त समीप आना ही है। इसीलिए सारे विश्व में हलचल बढ़नी है क्योंकि हलचल के बाद ही अचल-अटल आपका राज्य आना है तो बोलो बच्चे, हलचल को देख, 'क्या होगा'? – यह क्वेश्चन तो नहीं उठता? जब त्रिकालदर्शी हो तो त्रिकालदर्शी सीट पर सेट रहो तो 'क्या होगा'! ये नहीं आयेगा लेकिन स्पष्ट आयेगा – जो होगा हमारे लिए अच्छा होगा क्योंकि आप बच्चों के लिए तो अभी कल्याणकारी संगमयुग है। बच्चों को सदा याद रखना है कि हमारा बाप भी कल्याणकारी है, समय भी कल्याणकारी है, हमारा टाइटल भी विश्व-कल्याणकारी है, कर्त्तव्य भी विश्व-कल्याण करना है। अब तो हर तरफ अलग-अलग परिस्थिति द्वारा

हलचल होनी ही है इसीलिए ''सदा हर हालत में अचल-अडोल रहना है'' – यही मास्टर त्रिकालदर्शी की निशानी है। इसके बाद बाबा ने कहा विशेष क्या समाचार लाई हो?

मैंने कहा बाबा हांगकांग की हालतों को देख हांगकांग वाले बच्चों ने खास यादप्यार दी है। आबू के भी चारों तरफ के स्थानों का समाचार लाई हूँ और सर्व बच्चों ने भी बहुत-बहुत यादप्यार दी है।

तो बाबा मुस्कराते बोले – क्या हांगकांग के बच्चे सोचते हैं क्या, कि आगे क्या होगा? बाबा ने तो पहले से ही बता दिया है कि आश्चर्यवत बातें होंगी लेकिन बच्चों को आश्चर्य व क्वेश्चन मार्क न लगाए, सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास पक्का करना है। ये तो विश्व-परिवर्तन का सूचक है। हांगकांग वालों को और स्पीड में आगे बढ़ाने का साईन है। बच्चे आदि से लाड-प्यार से चले हैं और बापदादा भी गोल्डन-डॉल कहते हैं। अभी डॉल को परिस्थिति नचाती है या बाप के श्रीमत की अंगुली पर नाच रहे हैं। बापदादा कहते हैं ड्रामा की हर सीन को साक्षी हो कल्याण की भावना से देखो। देश में क्या भी हो हमारे लिए बेहद के वैराग्य की सूचना है।

उसके बाद बाबा को मधुबन का समाचार सुनाया कि दादी जी ने चारों ओर 'क्रोध-मुक्त' पर रूह-रिहान का प्रोग्राम रखा है। बाबा बोले–बहुत अच्छा है। समय प्रमाण अब बच्चों को बाप के प्यार का रिटर्न बाप समान बनना ही है। बाप – बच्चों को प्रैक्टिकल में लाने की हिम्मत की मुबारक दे रहे हैं। बाप ने सभी बच्चों को समय भी दिया है कि देखेंगे कि कौन-कौन बाप समान क्रोधमुक्त स्टेज का अनुभव करता और कराता है क्योंकि बच्चे लक्ष्य बहुत अच्छा रखते हैं लेकिन लक्ष्य और प्रैक्टिकल को समान बनाने में नम्बरवार हैं। अभी सभी को नम्बरवन का रिजल्ट देना है। बापदादा का तो सदा हर बच्चे के लिए पद्मगुणा से भी ज्यादा प्यार है। अभी सिर्फ स्नेह और शक्ति-स्वरूप को समान बनाना है।

ऐसे कहते बाबा ने डबल विदेशियों को भी यादप्यार दिया और कहा कि

बच्चे दिलाराम बाप की याद और सेवा में सफलता के तरफ आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। अभी दिन प्रतिदिन छोटी-छोटी बचपन की बातें छोड़ नालेजफुल, अनुभवी मूर्त, मैच्योर ([illegible]) बन रहे हैं और पुरुषार्थ की तरफ़ भी अटेन्शन है। ये देखकर बापदादा खुश हैं। भारत में भी जो वर्ग-वाईज़ सेवा चल रही है वो भी अच्छी हिम्मत-उल्लास से कर रहे हैं और राजस्थान वाले बच्चों ने भी हिम्मत-उल्लास से अच्छी सेवा की है। मुहब्बत से मेहनत सफलता स्वरूप बन जाती है। बापदादा राजस्थान के सेवाधारी बच्चों को विशेष मुबारक और यादप्यार दे रहे हैं। साथ-साथ चारों ओर के बच्चों को नाम और विशेषता स्वरूप से दिल के दुलार से यादप्यार दे रहे हैं। उसके बाद बाबा ने बड़ी दादी और जानकी दादी को इमर्ज किया और दोनों को दोनों बाहों में समा लिया और कहा कि दोनों बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा में और बाप समान बनाने की सेवा में अच्छी तरह से लगे हुए हैं। बापदादा पद्म-पद्म गुणा यादप्यार दे रहे हैं। साथ में और भी साथी मुरब्बी बच्चों को यादप्यार दे रहे हैं। ऐसे यादप्यार लेते मैं अपने साकार वतन में पहुँच गई। ओमशान्ति।